बुढ़ियाबखान ।

शतक ।

अर्थात् वञ्चक स्त्रियों के महाजाल से सती स्त्रियों के बचने के लिये सौ दोहा आदि छन्दों में एक बुढ़िया का वृत्तान्त ।

जिसे पण्डितदेवकीनन्दन तिवारी की आज्ञानुसार बाबू रामकृष्ण वर्म्मा ने भारतजीवन प्रेस मे छापा ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सन् १८०५ ई० ।

दूसरीबार १०००

मूल्य

विज्ञापन ।

इस बुढ़ियाबखान शतक में उन बुढ़ियों के चरित्र नहीं लिखे गये हैं जो अपनी उत्तम रीति नीति कुल मर्याद की बातें प्रकट कर कर कुचालिनियों को भी रात दिन सुचाल सिखाती रहती हैं । इस में उन्हीं कुटनियों के चरित्र लिखे गये हैं जो नित्त अपने कुटनपन से बिचारी भोली भाली बहू बेटियों को फुसलाय फुसलाय दोनों कुल से हाथ धोवाय देती हैं और आप सैकड़ों रुपये की महंतिन बन जाती हैं । इससे हमारी समझ में यह आता है कि यदि भले घर की बहू बेटियां दानलीला चुरिहारिनलीला न पढ़ कभी कभी इसको देखा करेंगी तो जरूर कुटनियों की धांखे बाजी समझ जाया करेंगी । बस इतनाही होने से दुष्टचरित्र की कमी हो जाय तो कुछ अचरज नहीं है ।

पं० देवकीनन्दनतिवारी सं० प्र० स०
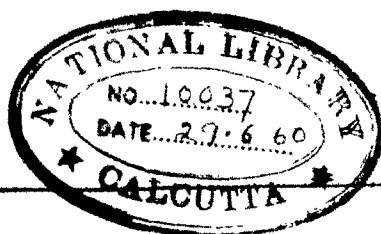
बुढ़ियाबखान शतक।

दोहा।

गंग नहाने एक दिन चली भोर अँधियार।
पांच सात बुढ़ियन में एक सुलच्छणि नार॥ १॥
तुलसीमाला हाथ लखि तिलक झलक सों भाल।
सतो कछुक उपदेशहित पूछनि प्रश्न रसाल॥ २॥
कहो मातु वे भामिनी कैसी हैं जग माहिं।
पढ़ें लिखें न हं कोटि विधि गुरुजन यत्न कराहिं॥ ३॥
जाने ज्ञान विवेक सब इह पुरलोक नसाहिं।
नेम धर्म कुल लाज तजि परपूरुष रमि जाहिं॥ ४॥
उनमें चतुर चलाक इक सब बुढ़ियन की रानि।
सतो सत्त मन डिगन लगि स्वगुनन चली बखानि॥ ५॥
परपूरुष के मिलन में उपजै अधिक सनेह।
तू क्या जाने बावरी तजै न निस दिन गेह॥ ६॥
सुन हमार जीवनचरित जो बिचित्र संसार।
तुरत तोर भ्रम भागहीं उपजे प्रीति अपार॥ ७॥
मात पिता की लाड़िली नान्हें कीन्ह बिवाह।
तब से परदन रह चली जो चह गौन उछाह॥ ८॥
परदन रख कोई क्या करै मन हमार दरियाव।
लाखन पार उतारहीं अपने सुगुन सुभाव॥ ९॥
पकरन खिलन को भल कह्यो सबै नगर के लोग।
मात पिता क्या बावरे हमें दहिं इक रोग॥ १०॥

हम आपै जग चातुरी रहीं छटीली लाल ।
संग पढ़ीं इक नारि कै जो मन्मथ को जाल ॥ ११ ॥
हमै सिखाया बहुत गुन सो बरनै तुम पाहि ।
तो सम हितू हमार कोउ और नहीं जग मांहि ॥ १२ ॥
जो कहिं बाजै ढालकी तुरत जांय वहि ठाम ।
फूहर पातर गीत बहु गावैं लै लै नाम ॥ १३ ॥
हमैं हसावैं रंग रस बातैं करैं बनाय ।
सुनै कोय कादर पुरुष आप जाय सकुचाय ॥ १४ ॥
सीख रही बड़ सिखन को टोना मंत्र टपार ।
नटो मटी नट भाट से मिलत्युं नैन उघार ॥ १५ ॥
भाइ भतीजा जो कोउ रोकि कहूं भुलाय ।
ता दिन सहनामथ करौं खाट परौं मुरझाय ॥ १६ ॥
रहौं प्रचंडा सबै विधि नाम धरै नहिं कोय ।
राम करै पितु मातु घर सबको अस सुख होय ॥ १७ ॥
बीस वर्ष पर व्याह कै गौना भयो हमार ।
स्वामी का सुख हमहि को नैहर मिल्यो अपार ॥ १८ ॥
रोय गाय गई सजन घर उहां न लागै नीक ।
खान पान सनमान बहु कछुक दिनन रह फीक ॥ १९ ॥
तियचरित्र को सुधि भई धीरज धर्यो शरीर ।
अपन गुन ढंग रंग मे मिटो सकल भै भीर ॥ २० ॥
खांय मास तिहुंकाल लो छिन छिन पान चबांय ।
तेल फुलेल लगाय मुख झांकियन से मुसकांय ॥ २१ ॥
गुरुजन लखि दुइ हाथ का लंइ घुघुट लटकाय ।
छैल छबीलन रसभरे नैन देंहि झमकाय ॥ २२ ॥

महरन सँग बड़ि प्रीति थी महरिन सँग व्यौहार।
छैल सुनरवा मीत था और एक मनिहार ॥ २३ ॥
जब घर आवैं साजना प्रगट करैं बहु रोग।
गये सजन सुख चैन से करैं विविध रस भोग ॥ २४ ॥

गीति छन्द।

मैंहटो थोपि हाथ पिय के ढिग :—
आल्यूं मुँह लटकाई !
मोर गुमान देखि बहु रंगी :—
औज जात सकाई ॥ २५ ॥
करि पोका मोउल्यूं उमास भरि :—
सुनै मोरि चतुराई।
यही तरह निम टाल बेता के :—
देल्यूं सहज बिताई ॥ २६ ॥

दोहा।

सजन हमारे थे भले हमैं बहुत सकुचांय।
हम चाहैं जो कुछ करैं कबहुँ न टुक रिसियांय ॥ २७ ॥
आप चहै जाड़न मरैं हमैं दुशाला देहिं।
नित उठि गात उघारहूं तभू बलैया लेहिं ॥ २८ ॥
आप चहै भूखे रहैं साग पात भरि पेट।
मेव मिठाई पै हमैं लावैं चदर लपेट ॥ २९ ॥
आप न पहिरैं पानहीं ओढ़ैं बसन पुरान।
जरी किनारीदार हम धरैं थान के थान ॥ ३० ॥
रही कमाई ससुर की सो सब लीन बेचाय।
नख सिख गहना हम लदीं तबहुँ न कोख जुड़ाय ॥ ३१ ॥

सवैया ।

नथिया पहिरौं जस चाक कुम्हार को, मूंगा औ मोती नगोननवारा । ढाल सो हाल रहो झुलनो पुनि नाक कटो फटि केतिक बारा ॥ फुली खुली मानो शूल हुली, दिल-दारन के हियरे खर धारा । सोहै बुलाक झलाक मलाक तिलाक हमैं पल नेक उतारा ॥ ३२ ॥

गीती छन्द ।

सौ सौ छेद कान में मेरे पहिरौं गुच्छन बाला ।
गले हांसुली सेर भरे की बिच बिच कांचनमाला ॥ ३३ ॥
छड़ा कड़ा पग बजैं घुंघुरू सुनत लोक मन लागे ।
चहै जहां कोउ रहै रसिकजन सोवतहू उठि जागै ॥३३॥
बदन मार जम रहा चोकना पहिरौं झीनो साड़ो ।
पड़े खड़े चलते हलते को, तन मन देहुं उभाड़ी ॥ ३५ ॥
गोदना मैं सब गात गोदायों सुरमा सिंदुर निराले ।
पांव महावर चाख बतासी, अबहु दांत मोर काले ॥३६॥

दोहा ।

सास ससुर लतमार थे जेठ देवर मुँहचोर ।
राँध पड़ासो दब सट कौन करै बतझोर ॥ ३५ ॥
होत भोर पौ फाटते निति उठि गंग नहांय ।
राह बाट ठलुआन सों, झमकि झूमि अठिलांय ॥ ३८ ॥
साधुन के ढिग जाय के पग धरि धरि मुसकाहिं ।
दर्श पर्श करि सबै बिधि कबहुँ न काहु लजाहिं ॥ ३९ ॥
मेला ठेला अब परै पैसा लेंय गिनाय ।
चलैं झपटि दिलदार सँग, बहु बिधि बात बनाय ॥ ४० ॥

धन धन सुख बड़ि भाग से मिले हमें इह लोक।
यहो लोक सुरलोक है तज बावरि तन शोक ॥ ४१ ॥
हमरो ढंग लखि कुटिलजन करन लगे कनफूस।
पड़े मामना जौन दिन लेउ हाड़ धरि चूस ॥ ४२ ॥
सखी कहै तू बांझ है भयो सोच जिय मांहि।
मन्त्र यन्त्र मिस कछुक दिन जात लख्यो कोउ नाहि ॥४३॥
गई जवानी चन से भयो गोट में लाल।
लाल झरावन इतै उत चलें मस्त गज चाल ॥ ४४ ॥
धागे धागे मजन ले चलें गाट भरि पूत।
ता पाछे मुसक्यात हम दरसावत करतूत ॥ ४५ ॥
सुजन हमारे दुखभरे हम भीतर हरखांय।
ऊपर से सुसकें कबहुँ कबहुँ अधिक घबड़ांय ॥ ४६ ॥
टोटका टामर किहीं बहु दिहीं फकीरन दान।
पीर जाहिरा पूजेहूं दुलह देवको थान ॥ ४७ ॥
बलि राजा के चरन परि गाजो केर निशान।
मोचो मेहतर नोतिहन किहीं बहुत सनमान ॥ ४८ ॥

चौपाई।

ले लड़िका मसजिद पर जाऊं।
मियँ को फूंक युत थूक सोहाऊं ॥ ४९ ॥
चलत ताजिया भेंट कराऊं।
शरबत रेउड़ी भोग लगाऊं ॥ ५० ॥
मरद शहीद सुनों कहिं कोई।
वहां गये बिन चैन न होई ॥ ५१ ॥

एहि बिधि किहौं अनेक उपाऊ।
जिये न लाल न छूट सुभाऊ ॥ ५२ ॥
कउनिउ जतन बचा इक लाला।
पोंछू नाम धरेंउ जग आला ॥ ५३ ॥
सिखयउं ताहि जुआ अरु चोरी।
जो व्यावसाय न काहु निहोरी ॥ ५४ ॥
औरहु एक सहज बदमासी।
परतियहरन सरन सुख रासी ॥ ५५ ॥

दोहा।

राज भलो अंगरेज को सच्चा होय निआव।
चोर जुआरिन बहुत कम सजा होय मनभाव ॥ ५६ ॥

चौपाई।

डरैं धनी अरु ज्ञानी मानी।
सब से डपट कहै हठ बानी ॥ ५७ ॥
बड़ो भाग अस मिलै सपूता।
चहूंदिस हमैं अमृत रस चूता ॥ ५८ ॥
वाको ब्याह भयो नहि गोरी।
तुम समान बहुआं बहु मोरी ॥ ५९ ॥
औरहु एक यहो रोजगारा।
प्रेमिन के ढिग करहुँ गुजारा ॥ ६० ॥
लै माला प्रभु नाम उचारौं।
निसि कर पाप चोंटि सब डारौं ॥ ६१ ॥

दोहा ।

वृथा लेउं नहिं दाम कछु करौं चौगुनो काम ।
मोर चौकस चहै जस जानत सीताराम ॥ ६२ ॥
यहि विधि गयो सोहाग मोर छूट न बाल सुभाउ ।
रांड़ भई तबहू सखी सोचहुं सुखद उपाय ॥ ६३ ॥

गीत ।

कबहुं २ जिय होय हुलासा—फिर बह होय जवानो ।
लोग कुटम परवार लाज तजि—जस मैं रहो दिवानो ॥ ६४ ॥
मोर सुभाव अबै अलबेला— दुइ चंगड़िन की नाईं ।
बकौं झकौं लड़ि मरौं अनाहक—मूड़ पटक यह ठांईं ॥ ६५ ॥
जो मोहि कहै अरे बकवादिन—चुप रह बुढ़िया माई ।
अस मन लगै आरियौं डाढ़ा—जिय को कसक मिटजाई ॥

चौपाई ।

मैं नहिं ठगी कहूं कोउ पाहीं ।
मोरे नखरन जगत बिकाहीं ॥ ६७ ॥
नेम धर्म्म ब्रत करौं अनेका ।
उपर चुपर दरसाय विवेका ॥ ६८ ॥
चलौं गैल बिचकौं बहु भांती ।
नाक सिकोड़ि अपन रग माती ॥ ६९ ॥
जो कोउ मोरि कुअै परछाहीं ।
सिर के बाल बिनौं छिन माहीं ॥ ७० ॥
भगतिन नाम मोर ठकुरानी ।
सब से अहै मोर पहिचानी ॥ ७१ ॥
घर घर मोर अहल पैठारा ।

मोहि कौन अग रोकनहारा ॥ ७२ ॥
तू क्यों सुनै मोर उपदेसा ।
तुव लिलार विधि लिख्यो कलेसा ॥ ७३ ॥

दोहा ।

तूने पढ़ लिख क्या किया दिया लुफुत सब छोड़ि ।
जनम संघातिन मांझ इक तुही रही मुंह मोड़ि ॥ ७४ ॥
आज काल के लोग सब कहैं पढ़ावन नारि ।
अस मन लगै लुआठ लै देहुं भवन मुंह जारि ॥ ७५ ॥
जो पै मानसि मोर सिख तजु अनेक खटराग ।
सास ससुर कुल कुटुम सब को केकर सँग लाग ॥ ७६ ॥
सुनि बुढ़िया को रसभरी बानी वह कुलनारि ।
डगी सत्त पल एक मह नेक न रह्यो सँभारि ॥ ७७ ॥

गीति ।

कान रहत बहिरी भइ गोरी नैन रहत भइ अंधी ।
प्राण रहत मर गई मीत बिन क्या गुरु गोरखधंधी ॥७८॥

दोहा ।

गई भवन असनान करि बुढ़िअहिं बेगि बुलाय
खोजन लगी सनेह सों निपट चतुर रसराय ॥ ७९ ॥
जो जस खोजै तिहिं मिलै ऐसी जग की रीति ।
मिलै एक सठ कुटिल नर तन मन कीन सुप्रीति ॥ ८० ॥
मूंद तोपि कै कछुक दिन चली भवन के बीच ।
परबस मन की बासना रहै मीच की मीच ॥ ८१ ॥
इक दिन गहना गांठरी कछुक माल असबाब ।
नवल मीत संग लै भगी दुहु कुल कीन खराब ॥ ८२ ॥

कछुक रुपैया हाथ लै चले घरैया लोग ।
कोतवाली के द्वार पर सोचैं सुभग संयोग ॥ ८३ ॥
थाप लिखावैं बहुत कुछ कौन लिखै बिस्तार ।
मतलब अपनो पूर करि चले लेन इजहार ॥ ८४ ॥
नालिस करि कछु खरिचि कैं रहे घरैया चुप्प ।
बिना सबूती पुलिस को सरकारहु में गुप्प ॥ ८५ ॥
हाय छय कुछ दिन मच्यो जच्यो पुलिस कोतवाल ।
पांव पटक करि सब मरे कौन पड़ै भ्रम जाल ॥ ८६ ॥
लिहे गांठरी बगल में घर घर सती लुकाय ।
जो जहँ पावैं लै मरै तन धन कम्प छिजाय ॥ ८७ ॥
कोइ मारै कोइ गालि दै कोई बजावै गाल ।
बकैं भिकैं कोइ दुख भरै कोइ हसैं दै ताल ॥ ८८ ॥
चुकी गांठरी तन लटो फटो बसन मन खोन ।
उपपति भगी बिदेश को रहा गांठ कछु छोन ॥ ८९ ॥
भई भूतिनी सी सती तभू सती वह नाम ।
लखो बिलोकिन नारि सब क्या क्या जगत कुकाम ॥ ९० ॥
मांगै घर घर टूकरा पेट भरै यहि भांति ।
खोदि लकड़ियन शिशु भगैं जगैं लगैं पग माति ॥ ९१ ॥
गलिन गलिन रोवत फिरै मिलै न मांगि भीख ।
सिर धुनि धुनि साचै सदा हाय कपट की सीख ॥ ९२ ॥
पंडाको इक दया करि लीन्हीं संग लगाय ।
बिमल टोकरो सिर धरै खानि लगो कमाय ॥ ९३ ॥

चौपाई ।

यह गति सतिन केर है माई ।
बिन बिद्या सब दोष दिखाई ॥ ९४ ॥
याते सब यत्न करो उपाऊ ।
पढ़ैं नारि जग बढ़ै बनाऊ ॥ ९५ ॥
कपट सीख समझैं सब नारी ।
कबहुँ न चलहिं कुमग पग धारी ॥ ९६ ॥
यह इतिहास समझिबे लायक ।
पढ़े सुने सब को गुणदायक ॥ ९७ ॥

दोहा ।

नारिन के दुरभाग्य से पढ़िबो भयो कुचाल ।
सजैं पूतरी काठ को नख सिख रूप बिशाल ॥ ९८ ॥
नारिगणु सुनि सीख यह करिहैं कोप बिधान ।
नारिमित्र आनन्द से सहहैं मधुर सुतान ॥ ९९ ॥
नारि पढ़ै मन लाय जो बुढ़िया केर बखान ।
बढ़ै सत्त मरजाद बहु जब लों जग ग्रसि भान ॥ १०० ॥